1. M.NITHYA KALA
Ph.d Scholar,
SRM Institute of Science And Technology,
Faculty of Science And Humanities,
Vadapalani, Chennai.

2. Dr. NISHA MURALIDHARAN
Research Supervisor &
Assistant Professor (Hindi),
SRM Institute of Science And Technology,
Faculty of Science And Humanities,
Vadapalani, Chennai.

# 'मैं पायल' उपन्यास में चित्रित किन्नरों की समस्याएँ

**सार**

महेंद्र भीष्म का उपन्यास "मैं पायल" उत्तर प्रदेश के किन्नर समाज पर आधारित है, जहां शासक वर्ग द्वारा ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है। भीष्मजी ने ट्रांसजेंडर लोगों पर काम करने और एक उपन्यास लिखने का निर्णय लिया, ताकि उन्हें संस्था की मौजूदा स्थिति से अवगत कराया जा सके और शासक वर्ग को वास्तविक अधिकार प्रदान किया जा सके। भीष्म ने कई कहानियाँ, नाटक और अन्य रचनाएँ भी प्रकाशित कीं, जिन्होंने समलैंगिक वर्ग के प्रति सत्ता की सोच और समझ पर सकारात्मक प्रभाव डाला। उनके कार्यों से पता चला है कि शासक वर्ग किन्नर समुदाय के प्रति समावेशी व्यवहार प्रदर्शित करता रहा है।उनका कार्य अभूतपूर्व था, क्योंकि उन्होंने व्याख्याताओं और जनता के समक्ष किन्नरों का मुद्दा उठाया, जिससे किन्नर समुदाय के बारे में लोगों की धारणा में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। इस लेख में भीष्मजी द्वारा लिखा गया उपन्यास 'मैं पायल'में चित्रित किये गये किन्नरों के समस्या के बारे में ही चर्चा किया गया है ।

**बीज शब्द : किन्नर, समाज, संघर्ष, समस्या, व्यक्ति**

किन्नर एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग ऐसे व्यक्ति का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो न तो पुरुष है और न ही महिला। ट्रांसजेंडर सदियों से समाज में मौजूद रहे हैं, जैसा कि महाभारत जैसे पौराणिक ग्रंथों में भी उल्लेख किया गया है। किन्नर, समाज का मुख्य और रंगीन हिस्सा है, होने पर भी इन्हें विद्वानों द्वारा नजरअंदाज कर दिया गया है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर में "किन्नर" शब्द का अर्थ लिखा है ---

" एक प्रकार के देवयोनि में माने जाने वाले प्राणी जिनका मुख घोडे के समान होता है। गाने बजाने का पेशा करने वाली एक जाति।"[1]

किन्नरो को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है जिनमें प्रमुख हैं – हिंदी में 'किन्नर' या 'हिजडा', 'द्विलिंगी, 'तृतीय प्रकृति', 'किम्पुरुष'. पंजाबी में 'खुसर', तेलुगु में 'नपुंसकुडु', 'कोज्जा' या 'मादा', तमिल में 'थिरुनंगई', 'अरावनी', मराठी में 'छक्का', अंग्रेजीमें 'ट्रांसजेंडर' या 'थर्डजेंडर' आदि। " वहीं "किन्नरी" शब्द का अर्थ किन्नर जाति की स्त्री और दूसरा अर्थ एक प्रकार का तम्बूरा या सारंगी है। वहीं रवीन्द्र प्रेस, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली से सन 1990 में प्रकाशित " शिक्षक हिन्दी शब्द कोश" में भी "किन्नर" शब्द के दो अर्थ दिये गये हैं – (1) स्वर्ग के गायक (2) गाने बजाने का पेशा करने वाली एक जाति। इसी शब्द कोश में " हिजडा" शब्द के भी दो अर्थ दिये गये हैं – (1) ऐसा व्यक्ति जिसमें प्राकृतिक रूप से स्त्री और पुरुष दोनों के कुछ कुछ लक्षण पाए जाएँ (2) नंपुसक।"[2]

समाज में किन्नर और हिजड़ा शब्द पर विवाद है। समाज में "हिजड़ा" शब्द को अपमान के रूप में हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया है । हिजड़ा समुदाय को "निम्न" या "अतिरिक्त" के रूप में चित्रित करता है और उन्हें उपहास का पात्र बना देते हैं। हिजड़े के रिश्तेदार को दोषी ठहराते है । इस प्रकार, यह घोषणा न केवल हिजड़ा समाज को नीचा दिखाती है, बल्कि संतानों और समाजों के भीतर अलगाव और एकांतवास के दौर को और भी आगे बढ़ाती है।

महेंद्र भीष्म के उपन्यास "मैं पायल" उत्तर प्रदेश के किन्नर समाज पर आधारित हैं। लखनऊ ट्रायल कोर्ट में कानूनी सहायता के वरिष्ठ अधिकारी डॉ महेंद्र भीष्म ने ट्रांसजेंडर लोगों पर काम करने, उपन्यास लिखने और उनका लाभ उठाने का निर्णय लिया। अपने शोधपत्रों के माध्यम से उनका उद्देश्य उन्हें संस्था की प्रचलित स्थिति से परिचित कराना, शासक वर्ग को वास्तविक अधिकार प्रदान करना तथा नौकरशाही को अच्छी स्थिति में लाना था। भीष्म का कार्य अभूतपूर्व था, क्योंकि उन्होंने व्याख्याताओं और जनता के समक्ष किन्नरों के मुद्दे को उठाया, जिससे राजनीतिक रूप से लोगों की धारणा में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। उनकी प्रचलित पुस्तक "'मैं पायल' हूँ" ने किन्नरों को स्थापित किया।

भीष्म ने अनेक कहानियाँ, नाटक और अन्य रचनाएँ भी प्रकाशित कीं, जिन्हें बाद में उच्च स्तर पर प्रस्तुत किया गया। उनकी पांडुलिपियों ने किन्नर वर्ग के प्रति सत्ता की सोच और समझ पर सकारात्मक प्रभाव डाला, जिसके कारण उनकी किन्नर समाज से संबंधित लघु फिल्मों का निर्माण हुआ।

डॉ. भीष्म के कार्यों से पता चला है कि शासक वर्ग किन्नर समुदाय के प्रति पूर्ण एवं व्यापक व्यवहार प्रदर्शित करता रहता है।

डॉ. भीष्म का कार्य सदैव ट्रांसजेंडर के अनुभवों पर आधारित है ।मैं पायल,किन्नर समाज और ट्रांसजेंडर बच्चों के सामने आने वाली चुनौतियों का एक सशक्त अन्वेषण है।पायल सिंह नामक एक ट्रांसजेंडर बच्ची को उसके पिताद्वारा क्रूरता का सामना करना पड़ता है। लोग हमेशा संतान के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार करते हैं, लेकिन ट्रांसजेंडर संतानों को कई यातनाएं सहनी पड़ती हैं।पायल नामक युवक अपने पिता की क्रूरता और परिवार की उपेक्षा को सहता है। किन्नर जुगनी के भाई राकेश को फटकार लगाई जाती है और प्रताड़ित किया जाता है "तुम हिजडे के भाई हो।"[3] यह कथन में "हिजड़ा" शब्द को अपमान के रूप में हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया है । हिजड़ा समुदाय को "निम्न" या "अतिरिक्त" के रूप में चित्रित करता है और उन्हें उपहास का पात्र बना देते हैं। हिजड़े के रिश्तेदार को दोषी ठहराते है । इस प्रकार, यह घोषणा न केवल हिजड़ा समाज को नीचा दिखाती है, बल्कि संतानों और समाजों के भीतर अलगाव और एकांतवास के दौर को और भी आगे बढ़ाती है। यह कथन एक अपमान है।

लेखक ने हिजड़ों के जीवन की वास्तविकताओं का अनुकरण किया है तथा समाज में उनके साथ होने वाले दुर्व्यवहार पर प्रकाश डाला है। युवावस्था और अकेलेपन के कारण उसे घर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा। वह किन्नर समाज का हिस्सा नहीं बनना चाहती, क्योंकि उसे लगता है कि किन्नरें भी साहस, आत्मविश्वास की कमी और चरित्र की कमी के कारण दोषी हैं।

पायल कहती है-"मैं हिजडा नहीं हूँ तुम लोगों की तरह में एकदम सही लडकी हूँ।"[4] यह पाठ समलैंगिक समाज के संदर्भ में "सही" और "नकली" की अवधारणा पर ध्यान केंद्रित करता है। लेखिका पायल ने कानूनी आदेश "हिज़डा" को नकारात्मक और अप्रशंसनीय तरीके से लागू करने की चर्चा की है, तथा लोगों में लिंग समानता के प्रमुख विचारों पर प्रकाश डाला है।लेखक ने शारीरिक बनावट के आधार पर पुरुषोचित अनुरूपता को परिभाषित करने की संकीर्ण मानसिकता पर भी चर्चा की है।

. “मैं पायल” आत्मकथात्मक उपन्यास है। यह गुरू पायल सिंह के जीवन संघर्ष पर आधारित है। उपन्यासकारने जुगुनी उर्फ जुगनू जो वर्तमान में किन्नर गुरू पायल सिंह के रूप में परिचित है। बचपन बहुत ही कष्टदायक रहा, पिता और राकेश के द्वारा शारिरिक और मानसिक प्रताड़ना सहन करना पड़ा। “ जो हाथ लगता उसी से पीटना शुरू कर देते थे तब तक जब तक टूट न जाए या स्वयं थक हार कर नशे की झाँक में लड़खड़ा कर गिर न जाएँ”[5] रोज-रोज की संघर्षपूर्ण जीवन से मुक्ति पाने के लिए उसे पर छोड़कर जाना पड़ता है। रास्तेमें भटकती भीख माँगती हुई फिरती है। कुछ दिन उपरांत उसे अप्सरा टॉकिज में नौकरी मिल

जाती है। अपनी पहचान छुपाकर वह पुरुष वेश में दिन काम करती है। लेकिन रात में स्त्री वेश धारण करती है क्योंकि हिजडे खुद को स्त्री समझते है।

समाज की मनसिकता यह है कि किन्नरों को समाज से अलग समझते हैं, घृणित रूप से देखते हैं। उन्हें आम इंसानों की तरह जीने नहीं दिया जाता। जिस कारण वे वेश्यावृत्ति को अपनाते हैं। चाहे स्वइच्छ से या जबरदस्ती। उन्हें बाध्य करनेवाले समाज के प्रतिष्टित व्यक्ति ही होते हैं। "मैं पायल" उपन्यास में भी पायल के साथ बलात्कार का प्रयास करते हैं। पायल जब घर छोड़कर रेल से जाती है तब उसका शिकार होती है। कानपूर में भी वही चौकीदार प्रमोद उसके साथ जबरदस्ती करने का प्रयास करता है। लखनऊ आने पर पायल कुछ अच्छे लोगों से भी मिलती है। लखनऊ में जागरण के दिन मंदिर परिसर में भजन संगीत होती है तो पायल भी उसमें नृत्य करती है, तभी उसे कुछ किन्नर पहचान लेते है और उसे गुरू भाई के पास ले जाते हैं। वही पायल रहने लगती है और आगे चलकर गुरू बनती है जो वर्तमान में गुरू पायल सिंह के नाम से परिचित है। उपन्यास में वर्णित पायल किन्नर की कथा समाज के प्रत्येक किन्नर के संघर्षों की गाथा है।

लेखक ने अपने उपन्यास में पुरुष की कुंठित मानसिकता का उजागर किया। माँ की वात्सल्य प्रेम और तड़प को दिखाया है। माँ किस प्रकार अपने बच्चे की रक्षा समाज से लड़कर करती है साथ ही उसकी असहायता का भी वर्णन किया है।

समाज के लोगों ने किन्नरों को किसी भी प्रकार की स्वीकृति नहीं दी है। इनकी एक अलग ही दुनिया है, इनके भी आम मनुष्यों की तरह कुछ सपने होते हैं जिन्हें पूरा करने के लिए ये प्रयास भी करते हैं, " सभ्य समाज से निराकृत, बहिष्कृत एवं तिरस्कृत यह वर्ग दो वक्त की रोटी का मोहताज होने के साथ ही अकेलेपन एवं अजंबीपन की पीड़ा को झेलने के लिए भी बाध्य हैं।"[6] समाज इन्हें प्रतिपल ठोकर तो मारता ही है साथ ही भद्दी गाली और उपहास उड़ाकर पुरस्कृत भी करता है। ऐसे तथाकथित सभ्य एवं महान लोगों से अपमानित होकर इन्होंने अपने लिए एक अलग समाज की व्यवस्था कर ली है, जहाँ यह उन्मुक्त रूप से जीवन जीने की चेष्टा करते हैं।" समाज से अपेक्षित यह वर्ग बसों में, सड़कों पर, विवाह या अन्य अवसरों पर नाच-गाना करके जो पैसे मिलते हैं उनसे यह अपना जीवन-यापन करते हैं। यह उपन्यास किन्नर समाज के सामने आने वाले संघर्षों और विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच संतुलन और सम्मान के महत्व पर प्रकाश डालता है।

यह उपन्यास हिजड़ा समाज द्वारा सामना किए जाने वाले आर्थिक प्रतिबंधों को भी उजागर करता है, जो उनके रोजगार और यौन गतिविधि के अवसरों को सीमित करता है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा के अवसरों की कमी और स्वास्थ्य सेवाओं में पक्षपात से स्थिति के कारण इनके स्थिति और भी खराब हो जाती है।

यह उपन्यास सांस्कृतिक परिवर्तन और शैक्षिक सुधार की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालता है,जिसका नकारात्मक प्रभाव ट्रांसजेंडर समाज के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। यह नाम मानव जाति में शैक्षिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालता है।

उपन्यास में किन्नर समुदाय द्वारा जीवन के विभिन्न पहलुओं, जिनमें लिंग, रूप और कामुकता शामिल हैं, सामना किए जाने वाले संघर्षों पर प्रकाश डाला गया है। लेखक किन्नर समुदाय के अनूठे अनुभवों को समझने और उनका सम्मान करने के महत्व पर जोर देते हैं, साथ ही समाज में अपनी पहचान और अपनेपन को बनाए रखने में उनके सामने आने वाली चुनौतियों पर भी जोर देते हैं। उपन्यास में शिक्षा प्राप्त करने के लिए व्यक्तियों के अपने संकीर्ण दायरे से बाहर आने के महत्व पर जोर दिया गया है ।

हिजड़ा समाज और उनके वर्गीकरण से जुड़े कलंक से निपटने के लिए व्यापक सामाजिक न्याय आवश्यक है। ध्यान केन्द्रित करने के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित है:

1. सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता । रूढ़िवादिता को तोड़ने और समझ को बढ़ावा देने में शिक्षा महत्वपूर्ण है। स्कूलों और समुदायों को ऐसे सर्वव्यापी शैक्षिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने चाहिए जो विविधता का जश्न मनाएं और दुखदायी रूढ़िवादिता को चुनौती दें। प्रयोगशालाएं, सेमिनार और प्रकाशन अभियान सार्वजनिक विचारों को नया रूप देने और पुरुषवादी पहचान की समझ को आगे बढ़ाने में सार्थक भूमिका निभा सकते हैं।

2. सरकारों को हिजड़ा समाज के अधिकारों को स्वीकार्य करें, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और नौकरी की सुविधा तक पहुंच शामिल है। घृणास्पद और आपत्तिजनक भाषण को दंडित करने के लिए भेदभाव-विरोधी मानकों को मंजूरी दी जा सकती है।

3. सामाजिक रुख बनाने में प्रकाशन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फिल्मों, वीडियो और इतिहास में हिजड़ा समाज का सहायक और सूक्ष्म चित्रण रूढ़िवादिता को चुनौती दे सकता है और उनकी घटनाओं को मानवीय रूप दे सकता है। उनकी जीत और योगदान का जश्न मनाने से सार्वजनिक चर्चा उपहास से सम्मान में बदल सकती है।

4. हिजड़ा समाज के लिए सहायक माहौल बनाने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। वर्गीकरण, मित्रों और सहयोगियों को आक्रामक शब्दावली और व्यवहार को जोरदार चुनौती देनी चाहिए। सहायता समूह और गैर सरकारी संगठन ट्रांसजेंडर लोगों और उनके परिवारों के लिए धन, परामर्श और सुरक्षित स्थान उपलब्ध करा सकते हैं।

5. भाषा पूर्वाग्रह को मजबूत कर सकती है, लेकिन यह परिवर्तन का एक शक्तिशाली रूप भी हो सकती है। गर्व और गरिमा के साथ "हिजड़ा" जैसे समझौतों को पुनः प्राप्त करना और पुनर्परिभाषित करना सामाजिक पूर्वाग्रहों को चुनौती दे सकता है। एक हद तक कार्य सर्वव्यापी भाषा अपनाते हैं, विभिन्न पहचानों का आनंद लेते हैं,लोगों से उनके चुने हुए सर्वनामों के साथ बात करने से सम्मान और सहमति की संस्कृति को बढ़ावा मिल सकता है।

निष्कर्ष रुप में यह कहा जा सकता है कि समाज में हाशिए पर पड़े किन्नर समाज को गंभीर चुनौतियों और कष्टों का सामना करना पड़ा है। महेंद्र भीष्म का उपन्यास "मैं पायल" इस समाज की पीड़ा, संघर्ष और अस्तित्व की पड़ताल करता है, तथा उनके संघर्ष को उजागर करता है। उपन्यास मेंवर्गीकरण की क्रूरता और किन्नरों की दोहरी स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। उपन्यास में पायल सिंह के शुरुआती संघर्षों पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें उनके पिता ने उन्हें स्वीकार करने से इनकार कर दिया, जिससे नाराजगी पैदा हुई और उनके परिवार की स्थिति खतरे में पड़ गई। पिता का व्यवहार, इस विश्वास के साथ चरम पर पहुंचता है कि बच्चों के पैतृक जननांग जानबूझकर बनाए गए मानव नहीं हैं, बल्कि घृणित हैं, जो किन्नर समाज पर सामाजिक दबाव और रूढ़िवादिता के प्रभाव को उजागर करता है।पायल को अपने प्रारंभिक वर्षों में अपने पिता की क्रूरता, अपने रिश्तेदारों की उपेक्षा और तिरस्कार के साथ-साथ शासक वर्ग के उत्पीड़न का भी सामना करना पड़ता है। उपन्यास में पायल सिंह का व्यक्तित्व संघर्ष का पात्र है, जो समाज के स्थापित ढांचे को चुनौती देता है तथा आत्मसम्मान और अधिकारों की वकालत करता है। वह खुद को किन्नर संघ का हिस्सा नहीं मानती, बल्कि पूरे असामान्य समुदाय की आवाज का प्रतिनिधित्व करती हैं। भीष्म का उपन्यास इस बात पर जोर देता है कि संगठनों को अपनी मानसिकता बदलने की जरूरत है ताकि वे किन्नर समाज के संघर्षों को स्वीकार कर सकें और यह सीख सकें कि वे भी मानव हैं और उन्हें संतुलन, सम्मान और समानता का अधिकार है।उपन्यास एक ऐसी संस्था के आविष्कार का भी आह्वान करता है जहां सभी लोग, अपनी पुरुषत्व या समानता की परवाह किए बिना, समतावाद और उत्कृष्टता को सहन कर सकें। किन्नर समाज की चिंताओं को संबोधित करते हुए, उपन्यास पाठकों को अपनी सोच बदलने और एक ऐसी संस्था बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, जहां सभी लोग, चाहे उनका लिंग या समानता कुछ भी हो, समानता और उत्कृष्टता को सहन कर सकें।

**संदर्भ ग्रंथसूची**

1.नीरज माधव। (2019), किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय (कुछ तथ्य, कुछ सत्य), ए.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी -- पृ.सं.16

2. नीरज माधव। (2019), किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय (कुछ तथ्य, कुछ सत्य), ए.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी -- पृ.सं.17

3. महेंद्र भीष्म। (2018) मैं पायल , अमन प्रकाशन , कानपुर -- पृ.सं.32

4. महेंद्र भीष्म। (2018) मैं पायल , अमन प्रकाशन , कानपुर -- पृ.सं.98

5. महेंद्र भीष्म। (2018) मैं पायल , अमन प्रकाशन , कानपुर -- पृ.सं.79

6. आशीष कुमार 'दीपांकर' (संपादक)। (2018) भारतीय समाज में किन्नरों का यथार्थ, अनुसंधान पब्लिशर्स & डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर -- पृ.सं.14

7. नेहा सक्सेना। (2022), किन्नर समुदाय और शिक्षा, - भारतीय प्रकाशन.

8. सुमित्रा प्रसाद। (2019), हिजड़ा विमर्श:सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण, गीता प्रकाशन.